M.A-I SEMESTER CC-3 01

अर्धमागधी आगम साहित्य का इतिहास

इकाई - (4) - चूलिका - सूत्र

Q- अर्धमागधी आगम साहित्य में चूलिका सूत्र का संक्षेप में विस्तार करें।

Ans- अर्धमागधी आगम साहित्य में चूलिका सूत्र दो हैं जो इस प्रकार के हैं। (1) नन्दीसूत्र

(11) अनुयोगद्वार

(1) नन्दीसूत्र के रचयिता दूष्य गणि के शिष्य देववाचक हैं, ये देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण से भिन्न हैं। इसमें 90 गाथाएँ और 59 गद्य सूत्र हैं। स्तुति के अनन्तर स्थविरावली में भद्रबाहु, स्थूलभद्र, महागिरि, आर्य श्याम, आर्य समुद्र, आर्य मंगु आर्य नागहस्ति, स्कन्दिल आचार्य, नागार्जुन आदि के नाम उल्लिखित हैं। सम्यक्श्रुत में द्वादश-अङ्ग गणिपिटक के आचारांग आदि 12 भेद बताए गये हैं। मिथ्याश्रुत में आत्मबोध से च्युत करनेवाली रचनायें परिगणित हैं। इसमें श्रुत ज्ञान के मूलतः दो भेद किये गये हैं- अङ्ग बाह्य और अङ्ग प्रविष्ट। टीकाकारों के अनुसार अङ्ग प्रविष्ट गणधरों द्वारा और अङ्ग बाह्य स्थविरों द्वारा रचे जाते हैं। आचारांग, सूत्र कृतांगादि अङ्ग प्रविष्ट के हैं। अङ्ग बाह्य के भेद आवश्यक और आवश्यक व्यतिरिक्त भेद है।

यह सभी नन्दीसूत्र ग्रन्थ के महत्वपूर्ण है।

(11) अनुयोगद्वार के रचयिता → आर्य रक्षित माने जाते है। विषय और भाषा की दृष्टि से यह ग्रन्थ पर्याप्त अर्वाचीन है। प्रश्नोत्तर शैली में पल्योपम, सागरोपम, संख्यात, असंख्यात और अनन्त के प्रकार एवं निक्षेप, अनुगम और नय का प्ररूपण किया गया है। इस ग्रन्थ में व्याकरण सम्बन्धी समास, तद्धित, धातु, निरुक्ति, वर्णागम, लोप एवं वर्णविकार तथ्यों का विवेचन किया गया है। पाखण्डियों में श्रमण, पाण्डुरंग, भिक्षु, कापालिक, तापस एवं परिव्राजकों के उल्लेख आए है। पेशेवर लोगों में दौसिय - कपड़ा बेचनेवाले, सोत्तिय-सूत बेचनेवाले, भंडे ओलिके बेचनेवाले, कोला लिया - कुम्हार आदि का - बर्तन बेचनेवाले, कोलालिया का निर्देश किया है। शिल्पजावियों में तंतुवाय-बुनकर, चित्रकार, दंतकार आदि के नाम आए है। काव्य के नवरस एवं संगीत के सप्त स्वरों का वर्णन भी इस ग्रन्थ में पाया जाता है।

- चरक, गौतम, महाभारत, रामायण प्रभृति ग्रन्थों के नाम निर्देश भी किये गये है।

नन्दीसूत्र में कवि ने श्रृंगार रस का स्वरूप का वर्णन किया है। इसी प्रकार सभी रसों का स्वरूप विश्लेषण किया गया है। क्रम निरूपण में सर्व प्रथम वीर रस को स्थान दिया है तथा अन्तिम रस प्रशान्त माना है।